

---

# Shri Nateshvara Bhujanga Stuti

---

## श्रीनटेश्वर भुजङ्गस्तुतिः

---

### Document Information

---

Text title : Shri Nateshvara Bhujanga Stuti

File name : naTeshvarabhujangastutiH.itx

Category : shiva, bhujanga, stuti

Location : doc\_shiva

Author : jnAnasambandhakRitA

Proofread by : Aruna Narayanan

Description/comments : From shrInaTarAjastavamanjarI

Latest update : July 10, 2022

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

July 10, 2022

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीनटेश्वर भुजङ्गस्तुतिः



श्रीज्ञानसम्बन्धकृता

लोकानाह्वय सर्वान् डमरुकनिनदैर्घोरसंसारमघ्नान्

दत्त्वाऽभीतिं दयालुः प्रणतभयहरं कुञ्चितं वामपादम् ।

उद्धृत्येदं विमुक्तेरयनमिति करादर्शयन् प्रत्ययार्थं

बिभ्रद्वह्निं सभायां कलयति नटनं यः स पायान्नटेशः ॥ १ ॥

दिगीशादिवन्द्यं गिरीशानचापं मुरारातिबाणं पुरत्रासहासम् ।

करीन्द्रादिचर्माम्बरं वेदवेद्यं महेशं सभेशं भजेऽहं नटेशम् ॥ २ ॥

समस्तैश्च भूतैस्सदा नम्यमाद्यं समस्तैकबन्धुं मनोदूरमेकम् ।

अपस्मारनिघ्नं परं निर्विकारं महेशं सभेशं भजेऽहं नटेशम् ॥ ३ ॥

दयालुं वरेण्यं रमानाथवन्द्यं महानन्दभूतं सदानन्दनृत्तम् ।

सभामध्यवासं चिदाकाशरूपं महेशं सभेशं भजेऽहं नटेशम् ॥ ४ ॥

सभानाथमाद्यं निशानाथभूषं शिवावामभागं पदाम्भोजलास्यम् ।

कृपापाङ्गवीक्षं ह्युमापाङ्गदृश्यं महेशं सभेशं भजेऽहं नटेशम् ॥ ५ ॥

दिवानाथरात्रीशवैश्वानराक्षं प्रजानाथपूज्यं सदानन्दनृत्तम् ।

चिदानन्दगात्रं परानन्दसौघं महेशं सभेशं भजेऽहं नटेशम् ॥ ६ ॥

करेकाहलीकं पदेमौक्तिकालिं गलेकालकूटं तलेसर्वमन्त्रम् ।

मुखेमन्दहासं भुजेनागराजं महेशं सभेशं भजेऽहं नटेशम् ॥ ७ ॥

त्वदन्यं शरण्यं न पश्यामि शम्भो मदन्यः प्रपन्नोऽस्ति किं तेऽतिदीनः ।

मदर्थं ह्युपेक्षा तवासीत्किमर्थं महेशं सभेशं भजेऽहं नटेशम् ॥ ८ ॥

भवत्पादयुगलं करेणावलम्बे सदा नृत्तकारिन् सभामध्यदेशे ।


सदा भावये त्वां तथा दास्यसीष्टं महेशं सभेशं भजेऽहं नटेशम् ॥ ९ ॥

भूयः स्वामिन् जनिर्मे मरणमपि तथा मास्तु भूयः सुराणां


साम्राज्यं तच्च तावत्सुखलवरहितं दुःखदं नार्थये त्वाम् ।  
सन्तापघ्नं पुरारे धुरि च तव सभामन्दिरे सर्वदा त्वन्-  
नृत्तं पश्यन्वसेयं प्रमथगणवरैः साकमेतद्विधेहि ॥ १० ॥  
इति श्रीज्ञानसम्बन्धकृता श्रीनटेश्वर भुजङ्गस्तुतिः समाप्ता ।

Proofread by Aruna Narayanan

---

——  
*Shri Nateshvara Bhujanga Stuti*

pdf was typeset on July 10, 2022

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

